International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 1, January-June, 2023, Impact Factor: 7.786

पुस्तकालय सामग्रियों पर पर्यावरणीय परिस्थितियों का प्रभाव

रीता सिंह

प्रवक्ता पुस्तकालय अध्यक्ष, भगवान आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी

परिचय

पुस्तकालयों का आधार पुस्तके हैं तथा इनकी सुरक्षा करना पुस्तकालय प्रबंधन का दायित्व है कोई भी वस्तु उपयोग करते-करते क्षतिग्रस्त होने लगती है तथा रखी-रखी खराब हो जाती है उसके क्षतिग्रस्त होने के और भी विभिन्न कारण हो सकते है। उसी प्रकार पुस्तक है जिनकी अधिक या कम उपयोगिता तथा लापरवाही होने क्षतिग्रस्त कर सकते है। अध्ययन सामग्री को प्रतिकूल रूप में प्रभावित करने वाली पर्यावरणी परिस्थितियां पुस्तकालयों में प्रलेखीय और प्रलेखीय दोनों ही प्रकार की अध्ययन सामग्री विविध स्वरूपों में पाठकों को ऊपर उपयोगार्थ संग्रह किया जाता है। कुछ पर्यावरण परिस्थितियां अध्ययन सामग्री पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है, निम्नवत परिस्थितियां सामग्रियों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

(1) दूषित पर्यावरण :- दूषित पर्यावरण में अमल की मात्रा में काफी बढ़ोतरी हो जाती है जिसके फलस्वरूप कागज में पीलापन आ जाता है और वह कमजोर हो जाता है। धूल से भी पुस्तकों एवं अन्य सामग्री को काफी क्षति पहुंचाती है ।

(2) धूप और तीव्र प्रकाश :- तीव्र प्रकाश या धूप सीधी ग्रंथ पर पड़ने से ग्रंथ का कागज चटक जाता है जिसके कारण पुस्तकें जल्दी फट जाती है। ताड़ पत्र भोजपत्र पर लिखित पांडुलिपियों और फिल्म तथा अन्य प्रकार की सभी सामग्री को क्षति पहुंचाती है।

(3) धूल एवं कार्बनिक पदार्थ :- यह कागज के रेशों को स्थान स्थान से कमजोर कर देते है। अम्लीय गैस से वातावरण प्रदूषित हो जाता है जिससे कागज पीला और कमजोर हो जाता है। प्रदूषित वातावरण में कई प्रकार के जीवाणु पैदा हो जाते है जो पाठ्य सामग्री को क्षति पहुंचाते है।

(4) अचानक ताप तथा नवमी में बदलाव :- इस प्रकार के अचानक परिवर्तन में ताड़ पत्र, भोजपत्र और पेपीरस कागज आदि पर लिखित, मुद्रित ग्रंथों को क्षति पहुंचाती है। ग्रंथों के पृष्ठों पर लचीलेपन में कमी आ जाती है और कागज अपने आप चटक और टूट जाता है और कमजोर हो जाता है।

(5) आद्र गर्म जलवायु :- इस जलवायु में सीलन के फलस्वरूप पुस्तकों के पृष्ठों में फफूंदी लग जाती है। पृष्ठ काले पड़ जाते हैं, पृष्ठों पर स्थान-स्थान पर गोल धब्बे पड़ जाते है। भोजपत्र एवं ताड़ पत्र पर लिखित शब्द परस्पर चिपक जाते है सीलन होने से कई प्रकार की कीट उत्पन्न हो जाते हैं जिसमें पुस्तकों एवं पांडुलिपियों को क्षति पहुंचती है।

इन प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में अतिरिक्त कागज में विकृतियां कुछ अन्य कारणों से भी होती है उनमें से स्याही भी है। स्याही के विकार से पुस्तकों रुग्ण हो जाती है। पुस्तकालय में अभिलेखगारो और पांडुलिपि संग्रहालय में संग्रहित दुर्लभ पांडुलिपि और पुस्तकों को क्षति से बचाने हेतु वातावरण को अनुकूल बनाए रखना आवश्यक है।

इसके लिए भंडार भवन को 22 **से** 25 **सेल्सियस के बीच तापमान और नमी** 45% **से** 55% **के बीच रखनी चाहिए।**

कुछ प्राकृतिक तत्व भी जिम्मेदार है तो पुस्तकालय में संकलित पुस्तकों को क्षति पहुंचाते है जिनमे प्रकाश , सीलन, अंधेरा, मिट्टी आदि प्रमुख है। आवश्यक है कि पुस्तकों के लिए उचित वातावरण की व्यवस्था की जाए जिसमे सीलन नहीं पहुंच सके ने अधिक रोशनी हो तथा ने अधिक अंधेरा।

शुष्क वायु से पुस्तकों के कागज खराब हो जाते है तथा शीघ्र की फटने लगते हैं। सीलन भी पुस्तकों की आयु को कम करती है। पुस्तकों को क्षति से बचाने के लिए जितने भी तरीके अपनाए जाए तुरंत इनका पूर्ण संरक्षण असंभव है क्योंकि कुछ कर्मचारी तथा पाठक अपना दायित्व भूल जाते हैं उन्हें पुस्तकों के प्रति अपनत्व की भावना नहीं होती। अतः उन्हें यह बात याद रखनी चाहिए कि उनमें संरक्षण से ही यह भविष्य में हमारे लिए उपयोगी है। पुस्तकों की क्षति से न केवल उनको हानि होती है बल्कि अन्य पाठकों तथा आने वाली पीढ़ी को भी क्षति का सामना करना पड़ेगा। जब पाठ को तथा कर्मचारियों में यह भावना जागृत होगी तभी पुस्तकें सुरक्षित एवं उपयोगी रहेंगी।